सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

ubl fnYyh
vad & 116

Jh lkbZ 'kdqu 30&31
vDVwcj & 2012

ॐ

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

।। ॐ Jh lkbZukFkk; ue%AA

।A ॐ Jh lnx~:ukFk nknk; ue%AA

fot;k&n'keh

24-10-2012

lkbZ 'kdu & 31

dk

'kqHkkjEHk o

fot;k n'keh dh vki lcdks

gkfnZd 'kqHkdkeuk,¡A

lsod

ckcw th rFkk

lkbZ fudru ifjokj

fot ;kn'keh

आज विजय–दशमी है यानी साई शके 31 का शुभारम्भ है श्री जगतगुरू साई नाथ महाराज ने इस कार्य की शुरूआत डेढ़ हजार साल पहले पिंड पर स्थापित करने की थी। जिस के लिए अनेक रूपों में धरती पर प्रकट होकर अनेक कार्य किया, यम, नियम सिद्धावस्था के साथ। अब कलयुग का समय पूरा हुआ है परन्तु उस से पहले ही असली करतूत यानी गोवा में ''श्री शक्तिपीठ'' की स्थापना श्री सद्गुरूनाथ दत्तात्रय भागवत (दादा महाराज) के माध्यम द्वारा स्थापित की है यानी आज की अवस्था ऐसी है कि जो ब्रह्मांड में है (अनन्त है) उसी का रूप पिंड (धरती) पर है उसी का नाम है ''सीमोलांगघन'' ''विजया–दशमी'' यही दिन प.पू. साई नाथ महाराज जी का जन्म का और यही दिन ''महा समाधि'' जिसको मनाने के लिए आज हम सब साई सेवक ''साई निकेतन'' के शक्ति केन्द्र में एकत्रित हुए है।

शक्तिपीठ स्थापना से पहले सद्गुरूनाथ दादा जी ने जो सम्मेलन लिए उन में जो विषय थे वह सब मानव के जीवन के बारे में थे। जो भी मानव इस दुनिया में जन्म को आता है उसे अपने जन्म का कारण समझना चाहिए, क्योंकि जन्म पाते ही कर्म की उपाधि हमें भुगतनी पड़ती है। परन्तु कर्म का दोहरा फल होता है। लोगों का अनुमान है कि कर्म एक ही प्रकार का होता है, लेकिन नहीं। कर्म का एक फल है सुख और दूसरा है दुःख। इसलिए दुःख की उत्पत्ति कैसी होती है उसका बोध होना आवश्यक है और उसका निराकरण कैसे होता है यह भी समझ लेना जरूरी है इस बात का मार्गदर्शन समय–समय पर प.पू. दादा जी द्वारा निराकरण के विषय को लेकर किया गया है जो कि आज उन्ही के बनाये हुए केन्द्र तथा केन्द्र प्रमुख द्वारा तमाम दुनिया में किया जाता है तथा जब तक सृष्टि है तब तक यह कार्य चलता ही रहेगा यह श्री जगतगुरू साईनाथ महाराज का बचन है उनका कहना है किः–

"SAI VACHAN"

All types of energies in the world have been collected, integrated, and put in this seat of energy (Shaktipeeth) which is the throne of God.

It will remain safe and be preserved for all eternity.

I have no faith in man. He may change any time, Hence, the energy itself is safely placed in the Earth.

If you are born with faith, the energy will flow into you.

A time will come when you have to choose between the command of God, and the suggestions of society.

If you follow the suggestions of society, God will not follow you.

However, if you follow God, then society is bound to follow you.

Today, I am the source of all the-isms (An-ism is a school of thought, such as Hinduism, Buddhism, etc.), Just as the trunk of the tree supports all branches.

And, as I am the trunk, the Shaktipeeth is the root of all the world.

You may ask me any question material things but henceforth, I will only give you spiritual answers.

I have taken a number of births on Earth, and worked diligently between these births, to establish the Shaktipeeth for all of mankind.

परन्तु दुःख यह है कि आज जो निराकरण पद्धति है उसका अध्यन हम सचेत होकर करते नहीं? उसके लिए प. पू. दादा जी के दो ग्रंथ है ''गुरू–प्रसाद'' और आत्मनिवेदन जो कि अपने आप में सिद्ध–सिद्धान्त पद्धति से परिपूर्ण है।

उदाहरण के तौर पर हमें आज जो दैनंदिन ॐ कार साधना और प्रार्थना दी गई है वह किसी व्यक्ति की मर्जी पर आधारित नहीं है ''वह एक आदेश है'' ''वह एक कृपा वचन है'' उसी वचन का हमारे द्वारा अगर हमारा बर्ताव होगा, हमारा रहन सहन, हमारा आचरण होगा, तो ही साधना सफल हो सकती है

पुराने जमाने में इस साधना को समझने और ऐसी अवस्था को पाने के लिए लोग जान तक दे देते थे वह देवधर्म का अभ्यास भी करते थे उनकी तुलना में अगर हम अपना खुद का ज्ञान भी परख लेगें तो हमें मालूम होगा कि साधक – पथ पर हमें ''श्री'' का यानी पहले अज्ञर का भी ज्ञान नहीं है। यह मार्ग इतना कठिन है कि पुरातन काल की साधना के बारे में तो हम सोच भी नहीं सकते। श्री गुरू ने इस बात का अध्यन करके इस मार्ग का श्री गणेश किया है। यानी हर भक्त को कारण दीक्षा देकर उसके जन्म का कारण उदित किया है तथा उसे साधक, सिद्ध और साध्य किया है, अभयदान के रूप में। तथा आपके प्रतिदिन के आचरण में गुरूतत्व का निवास है। इसलिए यद्यपि आपको जो स्थिति आसानी से प्राप्त हुई है फिर भी यह विषय मूलतत्व में कितना गहरा है, गम्भीर है यही ज्ञान गुरू प्रसाद, आत्मनिवेदन, सेमीनार, मुलाकात द्वारा दिया जाता है। इसको पढ़ने का कार्य एक साधक करता है परन्तु प.पू. दादा जी ने इसको जिस स्थिति में हमें खुले दिल से प्रदान किया है वह उन के इस जीवन के 72 सालों का कठिन परिश्रम, आचरण, गुरूआज्ञा का पालन का फल है। इसलिए जब आपका पढ़ना जारी रहेगा तब उस समय आपके मन की अवस्था चिन्तन–मय होना चाहिए। ऐसा होगा तभी आप भी समझ पायेगें और अन्य लोगों को भी ज्ञान दें सकेंगे। ऐसा श्री गुरू को पूरा विश्वास है।

çfrfnu dh lk/kuk

प्रतिदिन की साधना में हमें ''न्यास'' करने का उपदेश दिया गया है। उसी के अनुसार हम कर भी रहे है। लेकिन याद रहे यह न्यास कोई कसरत या योगा नहीं है न ही यह कोई अर्थहीन क्रिया है यह साधक को सिद्ध बनाने वाली क्रिया है अपने जन्म के पूर्व जो धर्म संचित रहता है। उसका निपटारा करने के लिए हम जन्म लेते हैं। पहले कर्म का निपटारा करने के लिये हम जन्म लेते है पहले कर्म का निपटारा कर के दूसरा भी कर्म पहले जैसा ही करने के लिए ही हमारा जन्म नहीं होता, जन्म पाते ही प्रतिपल, प्रतिक्षण कर्म की धारा बहती रहती है। उसी से कुछ कर्म अनुकूल कुछ प्रतिकूल होता है हर एक व्यक्ति के जीवन में देखे तो वह सवेरे सुखी तो शाम को दुःखी हो सकता है। क्योंकि शरीर के द्वारा हर क्षण जो कर्म की धारा बहती रहती है उसमें तारक शक्ति और विधातक शक्ति, दोनों शक्तियाँ उपस्थित होती है। उनके प्रभाव के अनुसार ही शरीर कर्म विनियोग करता रहता है। परिणाम हमारा सम्पूर्ण जीवन कर्त्तव्य के अनुसार नहीं बिताया जाता। सुख–दुःख की मिलीझुली क्रियाओं के प्रभाव से जीवन अपूर्ण रह जाता है और फिर जन्म लेना हमें आवश्यक हो जाता है ऐसी परिस्थिति में श्री गुरू ने हमें सुरक्षित रखने के लिए दोषों का विमोचन कर मुक्त किया है अब हम इस पर यकीन रखकर विचारों के आधीन न बने और जो आर्शीवाद मिला है उसको साधना मार्ग से खुद प्राप्त करना है।

इसलिए हम जो न्यास करते है उस में पहले उच्चार और बाद में क्रिया की जाती है उस समय जो लहरें सूक्ष्म स्पंदन निर्माण होते है वह अपने लिए अपने परिवार के लिए और समाज के लिए लाभदायक होगें। तथा जो भी अपने माध्यम के संपर्क में आया उन्हें हम अपनी साधना का लाभ दे सकते हैं इस प्रकार रोज की साधना दक्षता से करना, ध्यान के साथ न्यास करना रोजाना आवश्यक है। 1998 की विजयादशमी को दीपक भाई ने भक्तों को एक निवेदन लिखा था कि प.पू. दादाजी का आदर्श सेवक कैसा हो उन्ही के शब्दों में।

आज जो सेवक कार्य केन्द्रों पर सेवा कर रहे है उन्होंने श्री दादा जी के दर्शन किये है। श्री दादा जी की कार्य के प्रति लगन उन्होंने देखी है जिसकी वजह से उन्हें सेवक बनने की प्ररेणा मिली। मगर अगली पीढ़ी जो सेवक बनना चाहेगी उन्होंने दादा जी को देखा नहीं है। उनके मन में सेवा की प्रेरणा उत्पन्न होने के लिए हमें सेवा की लगन और आदर्श उनके सामने रखना होगा। यह जिम्मेदारी हमारी है इसका अनुसंधान रहे। हमारे विचार, उच्चार तथा आचार में जो बदलाव अपेक्षित है, वही अंतिम ''साध्य'' अवस्था हुई है।

दीपक भाई का कहना था कि प्राप्त की अवस्था बहुत कोमल है अतः हमें सोच विचार से ओग बढ़ना होगा। आज हमारे जीवन

में हो रही घटनायें तथा धर्म की वजह से जो दुःख हमें भुगतने पड़ते है उसकी वजह से हमारे विचार अस्थिर बनते हैं और श्रद्धा–अंधश्रद्धा के धूंध में हम अनुभव करते है तथा अंहभाव का उदय होने लगता है उस में से संदेह तथा दुबिधा निर्माण होने लगते है और साधक अनजाने में उपक्रान्त होने लगता है इसलिए सावधानी बरतना आवश्यक है।

आज के इस शुभ अवसर पर हम सब मिलकर यह प्रार्थना करें कि उनके उसूलों के अनुसार ही हम अपना आचरण रखने में सफल हो तथा उनकी तरह आदर्श शिष्य बनने के प.पू. साई नाथ महाराज, सद्गुरूनाथ दादा महाराज तथा सभी दिव्य पुण्य विभूतियाँ हमें आशीर्वाद, प्रेम, प्रेरणा तथा शक्ति प्रदान करें।

जन्म जन्म का सेवक

श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था

"साई निकेतन"

AA 'kqHk Hkor|AA

This is to inform you that this year the ***Aumkar Sadhana Samelen*** *is being held at* ***"Sai Niketan", 5, Jasola, Vihar New Delhi.***

It will start at 8.00 A.M. on December 23rd, 2012 and end at 8.00 P.M. on December 27th, 2012.

All are requested to attend for further details, please call:

Jogesh (9810045693), Kum Kum (9250388186), Alka (9810289819)

Shubham Bhavatu

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible